B.A. II Hindi Hons.

'हिन्दी साहित्य में भक्ति का उदय और विकास' का शोधपत्र

प्राध्यापक डॉ० सतीश चन्द्र पाठक

हिन्दी विभाग एस०एस०कॉ० जहानाबाद

भक्ति के उदय के सम्बन्ध में पाश्चात्य एवं इस्लामी विद्वानों द्वारा दिए गये तर्कों को भारतीय विद्वानों ने न केवल खंडन किया वरन् उनके द्वारा किए जा रहे दुष्प्रचार को भी समाप्त करने का प्रयास किया। श्री कृष्ण स्वामी आयंगर एवं श्री बाल गंगाधर तिलक जैसे विद्वानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि भक्ति के उद्गम का मूल स्रोत प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन ग्रंथ ही हैं।

इस सन्दर्भ में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के तर्कों का तो कोई उत्तर किसी के पास हो ही नहीं सकता। वे कहते हैं - कि "यह बात अत्यन्त उपहासास्पद है कि जब मुसलमान लोग उत्तर भारत के मंदिर तोड़ रहे थे तो उसी समय निरापद दक्षिण में भक्त लोगों ने भगवान की शरणागति की प्रार्थना की। मुसलमानों के अत्याचार से यदि भक्ति भावधारा को उमड़ना था तो पहले सिंध में और फिर उसे उत्तर भारत में प्रकट होना चाहिए था पर हुई दक्षिण में।" यदि मुसलमानों के बलात् इस्लाम के प्रचार की प्रतिक्रिया में भारत में भक्ति का उदय हुआ तो इसी समय फारस और यूरोप के अन्य देशों में भी समान प्रकृति से इस्लाम का प्रचार किया गया। उस स्थिति में वहाँ भी भक्ति का प्रादुर्भाव होना चाहिए था, किन्तु ऐसा हुआ नहीं। हिन्दू सदा से आशावादी रहा है। इस जाति की जीवनी शक्ति काफी प्रबल रही है इसीलिए विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी यह जाति निराश नहीं होती। यही कारण है कि भारतीय साहित्य सदा से सुखान्त रहा है। इस साहित्य में स्पष्ट निर्देश है कि मंच पर दर्शकों में निराशा का भाव पैदा करने वाली घटनाओं ~~[illegible]~~ यथा हत्या, मृत्यु इत्यादि को दृश्य नहीं दिखलाया जाए। हमारे भक्तिशास्त्र एवं दर्शन के बहुत से आचार्य मुस्लिम युग

पैदा अवश्य हुए किन्तु वे सब के सब इस्लामी सल्तनत के बाहर दक्षिण भारत के थे। यही नहीं उनकी कोई राजनैतिक महत्वाकांक्षा भी नहीं थी। ~~[illegible]~~ सम्पत्ति और जागीरदारी भी उनकी दृष्टि में कोई महत्व नहीं था। उनकी खुली घोषणा थी 'संतन को कहा सीकरी सों काम'। यदि राजनीतिक पराजय ही भक्ति के उद्भव का कारण होता तो जायसी, कुतबन, मंझन, उसमान आदि के भक्त होने का कोई कारण नहीं था।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तो भक्ति पर ईसाईयत के प्रभाव पर विचार करते हुए स्पष्ट किया है कि स्वयं ईसा मसीह भारत के कश्मीर में आये थे और बौद्ध धर्म की दीक्षा भी ली थी। कश्मीर में ही उनकी कब्र होने का दावा भी किया जाता है। ऐसे में यह बात तो यहीं समाप्त हो जाती है कि भक्ति ईसाईयत की देन है।

कुछ विद्वान मध्ययुग के भक्ति आन्दोलन को पौराणिक धर्म का पुनरुत्थान मानते हैं। उनकी मान्यता है कि गुप्त काल में विष्णु और लक्ष्मी को लेकर जिन धार्मिक भावनाओं का विकास हुआ था, वे ही मध्ययुग में राधा-कृष्ण एवं सीता-राम के माध्यम से विकसित ~~[illegible]~~ हुईं। भक्ति के उद्भव का एक सिद्धान्त यह भी है कि यह द्राविड़ प्रदेश में पैदा हुई। कहा भी जाता है- "भक्ति द्राविड़ उपजी लाये रामानन्द।" द्राविड़ से तात्पर्य दक्षिण भारत से है। यही तो पहले भी कहा गया है कि भक्ति का प्रादुर्भाव दक्षिण में ही हुआ था जिसे विभिन्न आचार्यों ने उत्तर भारत में प्रचारित किया। वस्तुतः दक्षिण के आलवार संतों ने भक्ति का प्रचार किया ~~[illegible]~~ यह बात अब सिद्ध हो चुकी है। भारतीय धर्मसाधना में भक्ति की परम्परा वैदिक काल से चली आ रही है। भक्ति का प्रतिपादन महाभारत एवं गीता जैसे ग्रंथों में भी हुआ है, जहाँ यह भागवत धर्म के नाम से जाना जाता है। वस्तुतः पौराणिक धर्म इसी भागवत धर्म का पुनरुत्थान है।